गुरु विमर्श चालीसा

गुरु चरणों में शीश धर, पाऊं सच्चा ज्ञान।
गुरु विमर्श हैं आप तो, ज्ञानी संत महान्।।
वाणी में अमृत घुला, है शब्दों में ओज।
'शशिकर' दर्शन कर लगा, पायें दर्शन रोज।।

जय विमर्श गुरु गुण के आगर, दर्शन जैसे दिव्य सुधाकर।1।
तात सनत व भगवती माता, धन्य बने वे जीवनदाता।2।
नगर जतारा हर्षित सारा, मिला उसे पावन ध्रुव तारा।3!
धर्मशास्त्र में ध्यान लगाया, भीतर उसकी उत्तरी छाया।4।
भ्रम के कारण इत उत डोले, कोई पूछे तो ना बोले।5।
गुरु विराग के चरण पखारे, प्रश्न किये हैं मन के सारे।6।
वह जग है कर्मों की माया, जप तप से मिटती है छाया।7।
कटे नहीं जब तक भव बन्धन, मानव करता रहता क्रन्दन।8।
संत समागम जो भी करता, संभल वह पाँवों को धरता।9।
जप-तप-ज्ञान वैराग समाये, कर्म निर्जरा से दुःख जाये।10।
तप की ज्योति भीतर जलती, कली ज्ञान की मन में खिलती।11।
खुशी मिली सुनकर के वाणी, कर्मों के बस में हर प्राणी ।12।
दृढ़ जो इच्छा सदा जगाये, मोह संग ममता बिसराये ।13।
वही सोच मन भाव जगाया, परिजन को सब हाल बताया ।14।
मुक्ति

वैयावृत्ति से जीवन जागा, गृहस्थ धर्म को गुरु ने त्यागा ।16।
आलू प्याज कभी न खाऊँ, रात्रि भोजन को बिसराऊं ।17।
ब्रह्मचर्य व्रत को स्वीकारा, हर्षित मन ऐलक पद धारा ।18।
जो सोचा वह कर दिखलाया, नगर देवेन्द्र धन्य बनाया ।19।
नगर बरासौ भिण्ड पधारे, मुनिवर दीक्षा को स्वीकारे।20।
राकेश केश लुंचन करवाये, दीक्षा पाकर मोद मनावे ।21।
नाम विमर्श उनने है धारा, जय जयकार करे जग सारा ।22।
पाँव चले गुरु पीछे-पीछे, सदा ज्ञान से जीवन सीचे ।23।
श्री विमर्श बाल ब्रह्मचारी, संत दिगम्बर पिच्छी धारी ।24।
संयम के नव सुमन खिलाये, सच्चे साधक संत कहाये ।25।
कलम कलाधर अद्भुत ज्ञानी, बने आप उत्तम व्याख्यानी ।26।
अनुभव और शास्त्र से पाया, उसका जग को मर्म बताया ।27।
गुरु देशना जो भी सुनता, वह मग के शूलों को चुनता ।28।
कुन्थुगिरि पर गुरुवर जावे, देख कुन्थु सागर हरषाये ।29।
दो सौ मुनि है पिच्छीधारी, सबकी महिमा अद्भुत न्यारी।30।
सबने मिलकर भाव जताये, मुनि विमर्श आचार्य बनाये ।31।
पन्द्रह वर्ष मुनि रुप बिताये, मन में नव संकल्प जगावे ।32।
गुरु विराग को भाव बताये, चरणों में जा आशिष पायें ।33।
नगर बाँसवाड़ा हरसाया, आचार्यश्री पावन पद पाया ।34।
कलम आपकी अविरल चलती, देख उसे मन कलियां खिलती ।35।
कविता-गीत-गजल जो आये, वे आशु कवि सम तुरत बनाये ।36।
सच कहा गुरु ने आँखें मूंद, यहाँ जीवन है पानी की बूँद ।37।
वृथा गर्व मत करे रे प्राणी, जिनवर की वाणी कल्याणी ।38।
मोहक मूरत सूरत प्यारी, गुरु विमर्श गुण गरिमायारी ।39।
शशिकर जो चालीसा गाये, जीवन अपना धन्य बनाये ।40।

गुरु विमर्श से संत कम करके देखा ध्यान।
'शशिकर' जिनवाणी सुने, मानव बने महान्।।
जिनके दर्शन मात्र से, मन में होता हर्ष।
वन्दन शत-शत बार है. गुरुवर धन्य विमर्श।

डॉ. 'खटका राजस्थानी'